युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज के 51वीं एवं राष्ट्रसंत महंत अवेद्यनाथ जी महाराज के छठवीं पुण्यतिथि

के उपलक्ष्य में आयोजित

प्रेस विज्ञप्ति

गोरखपुर 2 सितम्बर, 2020। गोखनाथ मन्दिर, गोरखपुर में **युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के 51वीं एवं राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के 6वीं पुण्यतिथि** के अवसर पर आज तीसरे दिन **'सामाजिक समरसता और संत–समाज'** विषय पर आयोजित संगोष्ठी में अपना विचार व्यक्त करते हुए मुख्य वक्ता सह सरकार्यवाह **राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ डॉ0 कृष्ण गोपाल जी** ने कहा कि एक समरस समाज से ही एक स्वस्थ एवं समृद्धिशाली राष्ट्र का निर्माण सम्भव है। भारतीय समाज को समरस बनाने में संत परम्परा का बहुत बड़ा योगदान रहा है। गुरु गोरक्षनाथ, कबीर, तुलसी, रविदास, विवेकानन्द से लेकर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने सामाजिक समरसता के लिए अपना सर्ववस्व समर्पित किया और भारतवर्ष के लिए समृद्धशाली बनाने में अपना योगदान दिया। प्रत्येक समाज में व्यवस्थाएं कितनी ही अच्छी क्यों न हों समय के प्रवाह के साथ व्यवस्थाएं टूट जाती हैं। समाज की यह विविधताएं नैसर्गिक हैं। ईश्वर अपने ऐश्वर्य के साथ विविधताओं को लेकर समाज में प्रकट होते है लेकिन कभी–कभी ये विविधताएं विषमताओं में बदल जाती हैं और विषमताओं से आपस में दूरियां बढ़ती हैं और समाज में कटुता व्याप्त हो जाती है। समाज आपस में संघर्ष करने लगता है। यह प्रकृति का स्वाभाविक नियम है। लेकिन भारत में स्थिति भिन्न है हम जानते हैं समाज में आर्थिक विविधताएं होती है। भारत विविधताओं का ही देश है, जलवायु, भाषा, भेष, रंग, स्थान, संस्कृति, आचार्य–व्यवहार, जातियां एवं उपजातियां जैसे अनेक विविधताएं भारत में विद्यमान हैं। हमने अंगिकार किया है कि विविधता सृष्टि का नैसर्गिक नियम है। इन विविधताओं के बीच भी हम एक हैं क्योंकि हमने संत–समाज के माध्यम से यह जाना है कि ये विविधताएं ईश्वरीय आशीर्वाद हैं। प्रत्येक व्यक्ति में ईश्वर निवास करता है। संतो द्वारा दी गई इसी आध्यात्मिक प्रेरणा से भारत एक सामाजिक समरसता वाला देश है।

भारत की जो वैदिक ऋषि परंपरा है वह परंपरा सर्वत्र ईश्वर को मानती है– **इशावस्यमिदं सर्वम्** कहते हुए हम सभी ने ऋग् वैदिक काल से ही इस बात को माना की ब्रह्म सर्वत्र है। परमात्मां वृक्ष, पशु–पक्षि, आकाश–पृथ्वी, जल–वायु सहित समस्त प्राणियों में व्याप्त है। ऐसा संस्कार हमारी संत परम्परा ने हमें दिया है।

8वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी के बीच का कालखंड बहुत ही विचित्र है इस बीच स्थान स्थान पर लोगों के बीच दूरियां बढ़ती जा रही थी। संघर्ष चरम पर था। वाह्य आक्रमणकारियों के सामने हमें पराजय का मुंह देखना पड़ा। बड़े–बड़े मंदिर तोड़ दिए गए, मूर्तियां क्षत–विक्षत कर दी गई सेना व राजा सभी समाप्त हो चुके थे। लोग कहां जाएं किसकी शरण में जाएं इस विपदा के समय में भगवान गोरखनाथ जी के शिष्यों ने हजारों की संख्या में देश में घूम–घूम कर अलख जगाया। एक सारंगी लेकर गांव–गांव घूमते हुए अलख जगाते हुए वे किसी भी प्रकार के भेदभाव को मना कर देते थे। अदृश्य परमेश्वर को ही सब कुछ मानने वाले थे। योग्य साधक पंजाब के जालंधर नाथ से लेकर के त्रिपुरा के मैनावती तक भगवान गोरखनाथ जी के शिष्यों ने जन–जागृति हेतु अलख निरंजन के माध्यम से नई चेतना व ऊर्जा प्रदान की तथा समता व समरसता का मार्ग दिखाया।

विशिष्ट वक्ता **प्रो० ईश्वर शरण विश्वकर्मा** अध्यक्ष उत्तर प्रदेश उच्चतर सेवा आयोग प्रयागराज ने कहा कि भारतीय मनीषा जगत बन्द्य है यह पूरा विश्व जानता है कि भारतीय मनीषा ने अपने तप और बल से जगत के कल्याण के लिए एक समरस समाज की प्रेरणा दी। इस प्रकार ऋषियों ने अपने तेज से आज के राष्ट्र का निर्माण किया। हम भाग्यशाली हैं कि हम उस भारत के निवासी हैं जिस भूमि का निर्माण संतो ने किया। हम सब जानते हैं ऋषि परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है उन ऋषियों की परंपराओं पर चलने वाली परंपराएं महासागर की तरफ से संत–समाज में मिल जाती हैं यह एक बड़ी थाती भारत के पास है जो दुनिया के पास नहीं है। इसीलिए महाभारत में वेदव्यास जी को कहना पड़ा संपूर्ण विश्व में भारत ही श्रेष्ठतम है। क्योंकि यहां की मनीषा यहां की संत परंपरा यह ऋषि परंपरा जगत की आलोक के लिए सदैव तत्पर रहती है। संपूर्ण जीवन को तप एवं त्याग में लगाने वाली परंपरा रही है इसलिए सब की मान्यता यही है कि जगत के कल्याण के लिए भारत की संत–परंपरा आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि संतो के पास विशेष गुण होता है। भारत भूमि सत्य, तप, प्रीति व धर्म की भूमि है। इसलिए भारत समर्थ देश है क्योंकि संतों ने अपने साहित्य से इस देश को समरस बनाकर समृद्धशाली किया। हमारी परंपरा में संत सब पर दया करने वाला होता है किसी से भी द्रोह न करने वाला तितिक्षु होता है दृढ प्रतिज्ञ वाला होता है। संकट में भी धैर्य रखने वाला होता है यह बहुत ही दिव्य समाज है।

संत ही अपने तपोबल से सूर्य को संतापक बनाते हैं अर्थात सूर्य के ताप को संत धारण करते हैं और समाज को प्रतापवान व समरस बनाते हैं। संत ही पृथ्वी को धारण करते हैं।

उन्होंने कहा कि इस कोरोना जैसी महामारी में संयम जो हम सबका बल बना हुआ है यह बल संतो ने हीं हम सभी को दिया है। उसी बल के कारण हम आज पूरे विश्व को कुछ दे सकने की स्थिति में हैं।

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में **महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्** के **अध्यक्ष** व **पूर्व कुलपति प्रो० उदय प्रताप सिंह** जी ने कहा कि जिन महापुरुषों की पुण्यतिथि के अवसर पर हम यहां सम्मेलन कर रहे हैं वे संत आजीवन सामाजिक समरसता के लिए प्रयास किए तथा रामजन्म भूमि आंदोलन में समाज के प्रत्येक जाति तथा वर्ग के लोगों को साथ लेकर ऐसा पूण्य कार्य किया जिसका संपूर्ण विश्व में कीर्तिमान स्थापित हो रहा है।

मंच पर प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, देवीपाटन के महन्त मिथिलेशनाथ जी उपस्थित रहें। वैदिक मंगलचारण डॉ0 रंगनाथ त्रिपाठी और गोरक्षाष्टक पाठ प्रांजल त्रिपाठी तथा संचालन डॉ0 श्रीभगवान सिंह ने किया।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से डॉ0 प्रदीप राव, डॉ0 शैलेन्द्र सिंह, प्रमथनाथ मिश्र, डॉ0 अरूण प्रताप सिंह, डॉ0 अरविन्द चतुर्वेदी, डॉ0 अभिषेक पाण्डेय, डॉ0 अविनाश प्रताप सिंह, डॉ0 रोहित मिश्र, डॉ0 फूलचन्द गुप्ता, विनय गौतम, डॉ0 प्रांगेश मिश्र आदि का विशेष सहयोग रहा।